पत्रांक– 14 / ए1 –07/ 15 453
शिक्षा विभाग,
बिहार, पटना।

निबंधित / फैक्स

प्रेषक,

शिवेश रंजन,
विशेष कार्य पदाधिकारी, उच्च शिक्षा।

सेवा में,

कुलसचिव,
पटना विश्वविद्यालय, पटना।

पटना, दिनांक 27 / 03 / 2015

विषय:– बिहार विधान सभा के 179वें सत्र में श्री नितिन नवीन, स०वि०स० द्वारा पूछे जाने वाले तारांकित प्रश्न संख्या–झ–55, की कंडिकावार उत्तर सामग्री (पूरक सामग्री सहित) / प्रतिवेदन उपलब्ध कराने के संबंध में।

महाशय,

उपर्युक्त विषयक बिहार विधान सभा के 179वें सत्र में श्री नितिन नवीन, स०वि०स० द्वारा पूछे जाने वाले तारांकित प्रश्न संख्या–झ–55 की छायाप्रति संलग्न करते हुए कहना है कि अनुलग्नक में अंकित तथ्यों पर सरकार की ओर से कंडिकावार उत्तर सामग्री (पूरक सामग्री सहित) / प्रतिवेदन विभाग को अविलम्ब विशेष दूत / फैक्स के माध्यम से उपलब्ध कराया जाय।

इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाय।

विश्वासभाजन

(शिवेश रंजन) 27/3
विशेष कार्य पदाधिकारी,
उच्च शिक्षा

अनुलग्नक–यथोक्त।

बिहार विधान-सभा सचिवालय

ज्ञाप सं0 प्र0 763 वि0 स0, पटना, दिनांक 26/3/2015

सेवा में

शिक्षा (प्रा0 शिक्षा) विभाग/ संसदीय कार्य, विभाग।

श्री/श्रीमती नितिन नवीन, स०वि०स० द्वारा चलते/आगामी अधिवेशन में तिथि 31-03-2015 को पूछा जानेवाला तारांकित प्रश्न संख्या 51-55 की दो प्रतियाँ जिस रूप में अध्यक्ष ने स्वीकृत की है, संवेष्टित है। नियम 78(3) के अन्तर्गत इसका लिखित उत्तर पूछे जाने की तिथि से पाँच दिन पूर्व (रविवार एवं अन्य सरकारी छुट्टियों के दिन को छोड़कर) इस सचिवालय को अवश्य भेज दिया जाये।

यदि किसी कारणवश पाँच दिन पूर्व लिखित उत्तर भेजना संभव न हो सके, तो उस उत्तर को 550 चक्रलिखित प्रतियाँ निश्चित तिथि के एक दिन पूर्व 3 बजे अपराह्न तक उपलब्ध करायी जाये।

नोट:- पेपर का कटिंग संलग्न।

प्रशाखा पदाधिकारी, विहार विधान-सभा।

संख्या...(एल0ए0), 134-डी0टी0पी0-10,000-30.1.2015

श्री नितिन नवीन, स0वि0स0 से प्राप्त तारांकित प्रश्न।

संख्या:-55, स्थानीय हिन्दी दैनिक समाचार में दिनांक-23.12.2014 को प्रकाशित शीर्षक " चोरी के डर से 25 लाख इश्यू नहीं हुई नई किताबें" को ध्यान में रखते हुए क्या मंत्री, शिक्षा (प्रा0शिक्षा) विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :-

(1) क्या यह बात सही है कि पटना विश्वविद्यालय के सेन्ट्रल लाइब्रेरी में वर्ष-1980 के दशक में खरीदी गई पुस्तकें वर्ष-2014 तक पुस्तकालयों की शेल्फ में नहीं रखी गई क्योंकि लाइब्रेरियन कोडर सता रहा था कहीं मेरे छात्र इसे चुरा न लें,

(2) क्या यह बात सही है कि उक्त पुस्तकालय में डाइरेक्टर इन्चार्ज ने अपने निरीक्षण के क्रम में पाया कि लाइब्रेरी के बाथरूम के बाहर किताबों की ढेर लगी हुई थी, लेकिन उक्त पुस्तकों की देख-रेख करने वाले सही ढंग से पुस्तकों को नहीं रख पाते;

(3) उपर्युक्त खंडों के उत्तर स्वीकारात्मक है तो क्या सरकार उक्त अनियमितता के लिए दोषियों पर कार्रवाई करने का विचार रखती है, नहीं तो क्यों ?

चोरी के डर से 25 साल इश्यू नहीं हुईं नई किताबें

कौशल किशोर मिश्र, पटना

- शेल्फ की बजाय बाथरूम के पास मिली करीब 2000 किताबों को जगह
- वर्तमान डायरेक्टर इंचार्ज इन्हें शेल्फ में रखवाने की कर रहे तैयारी

क्या आप यकीन कर सकते हैं कि किसी लाइब्रेरी में किताबें 1990 के दशक के मध्य में खरीदी जाएं और वर्ष 2014 तक वे पुस्तकालय की शेल्फ में इसलिए स्थान ना पा सकें क्योंकि लाइब्रेरियन को इस बात का डर था कि कहीं छात्र इसे वहां से चुरा न लें। बात किसी कस्बे या छोटे शहर के पुस्तकालय की नहीं बल्कि पटना विश्वविद्यालय की सेंट्रल लाइब्रेरी की हो रही है। उस विश्वविद्यालय की जो देश का सातवां सबसे पुराना है एवं जिसकी गौरव गाथा का वर्णन विश्वविद्यालय के लगभग प्रत्येक कार्यक्रम में प्रत्येक कुलपति करते नहीं थकते।

पुस्तकालय के वर्तमान डायरेक्टर इंचार्ज डॉ. श्रीराम पद्मदेव के अनुसार कुछ महीनों पूर्व उनकी नजर लाइब्रेरी के बाथरूम के बाहर किताबों के ढेर पर पड़ी। पहले तो उन्होंने सोचा कि शायद जगह की कमी के कारण ये किताबें उनसे पूर्व के लाइब्रेरियन या इंचार्ज ने वहां रखवा दी होंगी। इनमें कुछ किताबों में तो दीमक भी लग गई है। जब इनमें से कुछ को उठाकर पलटा तो उनमें इंजीनियरिंग, मेडिकल समेत तमाम अन्य विषयों की किताबें नजर आईं। लाइब्रेरी पहुंचे एक शोधार्थी को उन्होंने यह जांचने को कहा कि ये किताबें उसके विषय के लिहाज से ये कैसी हैं। जब उसने किताबों के ढेर से अपने विषय की किताबें पलटीं तो कई ऐसी किताबें नजर आईं जो काफी महत्वपूर्ण थीं। प्रो. पद्मदेव ने कहा कि किताबों को देखकर शोधार्थी की प्रतिक्रिया थी कि इन्हें देखकर कम-से-कम यह अंदाजा तो लग गया कि उस वक्त भी पीयू की सेंट्रल लाइब्रेरी कितनी समृद्ध थी।

> इन किताबों की साफ-सफाई कराकर इन्हें शेल्फ में रखवाने की तैयारी कर रहे हैं। दिसंबर अंत तक ये सभी किताबें अलमारियों में रखवा दी जाएंगी व छात्रों के लिए उपलब्ध होंगी।
> - प्रो. श्रीराम पद्मदेव, डायरेक्टर, इंचार्ज

पटना विश्वविद्यालय की सेंट्रल लाइब्रेरी में रखी किताबें जागरण

हाल में लाइब्रेरी में बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर के एक इतिहासविद् पहुंचे तो उन्हें भी डायरेक्टर ने ये किताबें दिखाईं। इतिहास की कई किताबों को देखकर उन्होंने इन्हें दुर्लभ बताया व कहा कि संभवतः इनमें कई तो दिल्ली विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में भी नहीं उपलब्ध होंगी।

हाल ही में जब वर्ष 2004 से 2006 की अवधि के बीच लाइब्रेरी की जिम्मेदारी संभालने वाले इंचार्ज पहुंचे तो वर्तमान इंचार्ज डॉ. पद्मदेव ने इन किताबों का ढेर दिखाया तो उन्होंने पुष्टि की कि ये किताबें उनके कार्यकाल से पहले खरीदी गई थीं। उनकी जानकारी के अनुसार 1985-90 के बीच खरीदी गई थीं। इन किताबों के बारे में उन्हें यह बताया गया था कि उक्त अवधि में जो लाइब्रेरियन रहे उन्होंने इसे शेल्फ में इसलिए नहीं रखवाया क्योंकि उन्हें डर था कि इन किताबों को छात्र शेल्फ से चुरा सकते हैं। तब से लेकर हाल तक ये किताबें बाथरूम के पास ही ढेर के रूप में रखी रहीं। हाल में वर्तमान निदेशक ने इन किताबों को वहां से हटवाने की पहल शुरू की व उन्हें अपने कमरे में रखवाया।

अब इसे छात्रों के साथ क्रूर मजाक नहीं तो और क्या कहेंगे कि इस अवधि में विश्वविद्यालय से छात्रों के करीब 25 बैच पासआउट हो गए पर लाइब्रेरी के किसी भी पूर्व पदाधिकारी ने इस बात की सुधि लेने की कोशिश भी नहीं की कि करीब दो हजार किताबें इस तरह क्यों बाथरूम के बाहर पड़ी है। जो जिम्मेदार थे वे छात्रों के लिए इन किताबों की महत्ता से अनजान बने रहे। क्या इस अकर्मण्यता व छात्र हितों के प्रति लापरवाही के लिए भी विश्वविद्यालय प्रणाली में कोई सजा है?

(15) जागरण - 23/12/2014